



## निर्माण उद्योग फ्लाई-ऐश ईंटों से पर्यावरण अनुकूल बनने की ओर अग्रसर

पटना। बिहार भारत में सबसे तेजी से बढ़ते राज्यों में से एक है। 2005-06 से 2014-15 की अवधि के दौरान, स्थिर कीमतों पर बिहार का सकल राज्य घरेलू उत्पाद जीएसडीपी सालाना 10.5 प्रतिशत पर बढ़ा, जो सभी प्रमुख भारतीय राज्यों में सबसे ज्यादा है। बिहार में ईंट उद्योग एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। वर्तमान में ईंट उद्योग विकेन्द्रीकृत उत्पादन गतिविधि पर आधारित है तथा ऊर्जा गहन, संसाधन घटाने और अत्यधिक प्रदूषण वाली प्रौद्योगिकियों का उपयोग करता है। हाल ही में, बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड बीएसपीसीबी के अध्यक्ष डॉ अशोक घोष ने पारंपरिक ईंट बनाने के तरीकों के कारण शीर्ष मिट्टी के नुकसान की चिंता भी उठाई। डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स समूह के वाईस प्रेसिडेंट, डॉ सौमेन माईटी के अनुसार, आज की स्थिति में, बिहार में फ्लाई-ऐश ईंटों के उत्पादन और उपयोग को प्रोत्साहित करने से, थर्मल पावर प्लांट्स के कचरे के उत्पादक उपयोग का तथा उत्सर्जन तीव्रता को कम करने का अवसर है। साथ ही साथ स्थानीय समुदाय को रोजगार प्रदान करता है। बिहार के चयनित जिलों में लागू फ्लाई-ऐश ईंट गुणवत्ता रेटिंग प्रणाली ने दिखाया है कि फ्लाई ऐश ईंट निमाता भारतीय मानक के अनुसार अच्छी गुणवत्ता वाली ईंटें बना रहे हैं।



# राष्ट्रीय सहारा

राष्ट्रीयता ■ कर्तव्य ■ समर्पण

## शीर्ष मिट्टी खोने से कृषि उत्पादन में आएगी बाधा

पटना (एसएनबी)। बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने बिहार में पारंपरिक ईट बनाने की प्रथाओं के कारण शीर्ष मिट्टी के नुकसान पर अपनी चिंता व्यक्त की है। इससे जुड़ी हुई विभिन्न चुनौतियों पर काम करने के लिए डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स, एक गैर-लाभकारी संठन के साथ मिलकर सक्रिय प्रयास कर रहा है। बिहार में ईट उद्योग, ऊर्जा गहन, संसाधन घटाने और अत्यधिक प्रदूषण

प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके विकेंद्रीत उत्पादन गतिविधि पर आधारित है।

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. अशोक घोष ने पारंपरिक ईट बनाने के तरीकों और बिहार की अर्थव्यवस्था पर इसका समग्र प्रभाव होने के कारण शीर्ष मिट्टी के नुकसान की चिंता उठाई है। उन्होंने जोर दिया कि बिहार मुख्य रूप से कृषि राज्य है। ईट उत्पादन और सड़क

ईट उत्पादन व सड़क निर्माण में शीर्ष मिट्टी के जाया होने पर बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने जतायी चिंता

निर्माण के कारण हर साल 10,000 हेक्टेयर शीर्ष मिट्टी खो जाती है। नतीजतन कृषि उत्पादन में काफी हद तक बाधा आ जाएगी। राज्य की खाद्य उत्पादन क्षमता को चुनौती देगी। लाल ईट उद्योग में खाद्य सुरक्षा, वायु

प्रदूषण, स्वास्थ्य चिंताओं और बिहार की समग्र स्थिति के आर्थिक विकास सहित कई चुनौतियां हैं। राज्य की आर्थिक वृद्धि पर्यावरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य की लागत पर नहीं है। पर्यावरण अनुकूल ईट उत्पादन प्रौद्योगिकियों और अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए पहल करना बेहद महत्वपूर्ण है। इस संबंध में व्यवस्थित कार्रवाई और फॉलो-अप करने के मामले में बिहार अग्रणी रहा है। डॉ. के. विजया लक्ष्मी, उपाध्यक्ष, डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स ने कहा कि फ्लाई ऐश ईटें सबसे अधिक अनुकूल सामग्री हैं।



Development Alternatives



# अमृतवर्षा

बिहार की ख़बर, सबसे पहले

## ईंट उद्योग को पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए पहल

पटना। बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (बीएसपीसीबी) ने बिहार में पारंपरिक ईंट बनाने की प्रथाओं के कारण शीर्ष मिट्टी के नुकसान पर अपनी चिंता व्यक्त की है और इससे जुड़ी हुई विभिन्न चुनौतियों पर काम करने के लिए डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स संगठन के साथ मिलकर सक्रिय प्रयास कर रहा है। बीएसपीसीबी के अध्यक्ष डॉ. अशोक घोष ने पारंपरिक ईंट बनाने के तरीकों और बिहार की अर्थव्यवस्था पर इसका समग्र प्रभाव होने के कारण शीर्ष मिट्टी के नुकसान की चिंता उठाई है। उन्होंने जोर दिया कि बिहार मुख्य रूप से कृषि राज्य है और ईंट उत्पादन और सड़क निर्माण के कारण हर साल 10000 हेक्टेयर शीर्ष मिट्टी खो जाती है। नतीजतन कृषि उत्पादन में काफी हद तक बाधा आ जाएगी और राज्य की खाद्य उत्पादन क्षमता को चुनौती देगी। वहीं डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स समूह के वाईस प्रेसिडेंट, डॉ. सौमेन माईटी के अनुसार बिहार में 153 फ्लाई ऐश ईंट उद्यम हैं। उन्होंने संकेत दिया कि नीति पर्यावरण बिहार में अनुकूल है, लेकिन कार्यान्वयन को आगे सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता है।





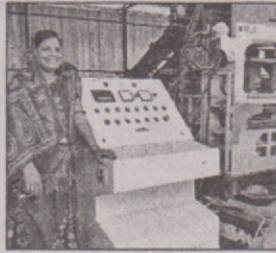
# जनसत्ता

## मिक्की दे रही पर्यावरण अनुकूल उद्योग को बढ़ावा

हौसले को सलाम: अररिया की महिला उद्यमी ने ईट उद्योग के नियमों को फिर से किया परिभाषित

पटना, संवाददाता

बिहार में ईट उद्योग हमेशा से पुरुषों के प्रभुत्व वाला क्षेत्र रहा है तथा महिलाओं की भागीदारी केवल परंपरागत ईट निर्माण इकाइयों में मजदूरों के रूप में रही है। परन्तु, अपनी मेहनत और कार्यकुशलता से इस स्थिति को बदलने में कामयाब रही हैं, वह महिला हैं अररिया की श्रीमती मिक्की देवी। जिन्होंने इस उद्योग के नियमों को फिर से परिभाषित किया और अब एक सफल उद्यमी है, जो अररिया जिले के नारपलंज इलाके में एक फ्लाई-ऐश ईट बनाने की इकाई चलाती है। वह वास्तव में बिहार में फ्लाई ऐश ईट सेक्टर में पहली महिला उद्यमियों में से एक है। अररिया जिले के मधुरा दक्षिण की पूर्व मुखिया श्रीमती मिक्की देवी काफी समय से व्यवसाय शुरू करने के विचार को रखे हुए थी और फ्लाई-ऐश ईट निर्माण के क्षेत्र में एक



अवसर उनको दिखा। उन्होंने अररिया में मधुरा दक्षिण के वर्तमान मुखिया से उनके समर्थन के लिए परामर्श किया और भवानी शंकर फ्लाई ऐश ईटों की स्थापना की और इसका संचालन अप्रैल 2018 में शुरू हुआ। उद्यम को सरकारी ऋण से जुड़ी सब्सिडी का लाभ भी मिला, जो की प्रधानमंत्री रोजगार के माध्यम से पीएमईजीपी से प्राप्त हुआ। बकौल मिक्की देवी, जब मैंने पीएमईजीपी योजना के लिए आवेदन किया था, मैंने इंटरनेट पर फ्लाई ऐश ईट निर्माण पर व्यापक शोध किया। शोध ने मुझे फ्लाई ऐश ईट निर्माण, मशीनरी और उपकरणों

की आवश्यकता में शामिल प्रक्रियाओं को समझने में मदद की और कहां से मैं उन्हें स्रोत कर सकती थी यही जानकारी मिली। जब सरकार ने पीएमईजीपी योजना के तहत मुझे ऋण मंजूर किया, तो योजना पूरी तरह से तैयार की गई। इकाई में विनिर्माण और संचालन अप्रैल 2018 में शुरू हुआ और महीने के अंत तक उनकी पहली फ्लाई ऐश ईटों को बेचा गया। 15 जुलाई, 2018 तक यूनिट द्वारा निर्मित और बेची गई ईटों की कुल संख्या 3 लाख थी, जिनमें से 70 से 75 प्रतिशत ईटें एरिया में निजी परिवारों को और बाकी को सरकारी परियोजनाओं को आपूर्ति की गई थी। बाजार की मांग और उत्पादन लागत के आधार पर प्रत्येक ईट 6.5 से 7.5 पर बेची जाती है। उनकी इकाई को कहलागांव में एनटीपीसी इकाई से फ्लाई ऐश मिलती है। वह आपूर्तिकर्ताओं से कच्चे माल की

खरीद और अंतिम उत्पादों के विपणन को अपने आप देखती है। वर्तमान में इकाई की प्रति दिन 10,000 ईटों का निर्माण करने की क्षमता है। फ्लाई ऐश विनिर्माण इकाई में वर्तमान में 16 कर्मचारी हैं, जिनमें से 8 स्थायी कुशल कर्मचारी हैं और शेष को सामयिक रूप से किराए पर लिया जाता है। हालांकि, मिक्की देवी के लिए यात्रा आसान नहीं थी, जैसा कि स्थापना के शुरूआती दो महीनों के दौरान उन्होंने अपने उत्पाद की कीमत पर ज्ञान की कमी के कारण व्यापार में घाटे को देखा। भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा अनुशंसित आकार के विपरीत हम जिन मोल्डों का उपयोग कर रहे थे, वे बड़े आकार के थे। इसके अलावा फ्लाई ऐश ईट, बाजार में एक नया उत्पाद होने के कारण प्रचार करना मुश्किल था और कभी-कभी, मांग की कमी या कच्चे माल की आपूर्ति की कमी के कारण भी उत्पादन बंद हो गया।



Development Alternatives



# MORNING INDIA

## Bihar poised for greening of construction sector through fly-ash technology

### OUR CORRESPONDENT

**PATNA:** Bihar is one of the fastest growing states in India. During the period 2005-06 to 2014-15, the Gross State Domestic Product (GSDP) of Bihar at constant prices grew annually at 10.5 percent, which is one of the highest among all major Indian states. Amongst many sectors in Bihar, the brick industry currently is based on decentralized production activity using energy intensive, resource depleting and highly polluting technologies. Recently, Dr. Ashok Ghosh, Chairman, Bihar State Pollution Control Board (BSPCB), also raised the concern of top soil loss due to traditional brick making prac-

tices. In order to ensure that state's economic growth is not at the cost of environmental and public health, it is extremely important to take initiatives to promote cleaner brick production technologies and waste management. According to Dr. Soumen Maity, Vice President, Development Alternatives Group, "In the given situation, encouraging the production and the usage of fly ash bricks in Bihar is an opportunity for productive utilization of waste from thermal power plants while reducing the emission intensity of the brick production and providing decent jobs to local community. A Fly Ash Brick Quality Rating System implemented in selected districts of Bihar has shown that

fly ash brick manufacturers are producing good quality bricks as per Indian Standard". He also added that "some of the aspects of fly ash bricks are better than red bricks such as reducing the indoor temperatures and reduced use of mortar during construction. Hence fly ash bricks are not only eco-friendly, but also reduces cost of construction." Fly Ash production in Bihar and its benefits Bihar has 4 thermal power plants that produce an estimated 10.6 million tons of fly ash every year and this is expected to increase to 22.57million tonnes by the year 2020. There is enough fly ash available to produce about 7000 million bricks per year.



# आज समाज

## बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स की बिहार में ईट उद्योग को पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए पहल

पटना, 16 सितम्बर। बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (बीएसपीसीबी) ने बिहार में पारंपरिक ईट बनाने की प्रथाओं के कारण शीर्ष मिट्टी के नुकसान पर अपनी चिंता व्यक्त की है और इससे जुड़ी हुई विभिन्न चुनौतियों पर काम करने के लिए डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स, एक गैर-लाभकारी संगठन के साथ मिलकर सक्रिय प्रयास कर रहा है।

बिहार में ईट उद्योग कर्जा गहन, संसाधन घटाने और अत्यधिक प्रदूषण प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके चिकेन्द्रीकृत उत्पादन गतिविधि पर आधारित है। बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (बीएसपीसीबी) के अध्यक्ष डॉ अशोक घोष ने पारंपरिक ईट बनाने के तरीकों और बिहार को अर्थव्यवस्था पर इसका समग्र प्रभाव होने के कारण शीर्ष मिट्टी के नुकसान की चिंता उठाई है। उन्होंने जोर दिया कि बिहार मुख्य रूप से कृषि राज्य है और ईट उत्पादन और सड़क निर्माण के कारण हर साल 10000 हेक्टेयर शीर्ष मिट्टी खो जाती है। नतीजतन, कृषि उत्पादन में काफी हद तक बाधा आ जाएगी और राज्य की खाद्य उत्पादन क्षमता को चुनौती देगी। लाल ईट उद्योग में खाद्य सुरक्षा, वायु प्रदूषण, स्वास्थ्य चिंताओं और बिहार की समग्र स्थिति

बिहार में पारंपरिक लाल ईट उद्योग में खाद्य सुरक्षा, वायु प्रदूषण, स्वास्थ्य चिंताओं और बिहार के समग्र राज्य की आर्थिक वृद्धि और कल्याण सहित कई चुनौतियां हैं और इसलिए निर्माण क्षेत्र को पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए पर्याप्त उपाय किए जाने चाहिए

के आर्थिक विकास सहित कई चुनौतियां हैं और इसलिए पर्याप्त उपाय किए जाने चाहिए।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि राज्य की आर्थिक वृद्धि पर्यावरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य को लागत पर नहीं है, पर्यावरण अनुकूल ईट उत्पादन प्रौद्योगिकियों और अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए पहल करना बेहद महत्वपूर्ण है। इस संबंध में व्यवस्थित कार्रवाई और फॉलो-अप करने के मामले में बिहार अग्रणी रहा है। टास्क फोर्स की स्थापना, फ्लाई ऐश गुणवत्ता रेटिंग सिस्टम, ग्रीन एंटरप्राइज मेला, राज्य परामर्श, क्षमता विकास, प्रौद्योगिकी सुधार, नई तकनीक और जागरूकता सहित कई पहल की गई हैं। ग्लोबल थिंक टैंक डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स क्लीनर ईट उत्पादन प्रौद्योगिकियों को अपनाने में तेजी लाने के लिए बिहार सरकार के साथ काम कर रहा है। डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स समूह के चार्टर्ड प्रेसिडेंट, डॉ सीमेन माईटी के अनुसार 'बिहार में 153 फ्लाई ऐश ईट उद्योग हैं। उन्होंने संकेत दिया कि नीति पर्यावरण बिहार में अनुकूल है, लेकिन कार्यान्वयन

को आगे सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता है। उन्होंने रेखांकित किया, फ्लाई ऐश ईट उपयोग सहित मजबूत निगरानी प्रणाली की आवश्यकता फ्लाई ऐश ईट बनाने इकाइयों के लिए रेत कोटाय ओपीसी सीमेंट उपलब्धता को हल करना फ्लाई ऐश ईट बनाने इकाइयों के जिला क्लस्टरिंग को प्रोत्साहित करना या फ्लाई ऐश ईटों के प्रचार और जागरूकता के लिए प्रचार और फ्लाई ऐश ईटों की उपलब्धता और गुणवत्ता पर जानकारी में और को कम करने की आवश्यकता है।

डॉ के. चित्रया लक्ष्मी, उपाध्यक्ष, डेवलपमेंट अल्टरनेटिव्स, का कहना है कि फ्लाई ऐश ईट सबसे अधिक 'अनुकूल सामग्री' है, क्योंकि यह धर्मल पावर प्लांट्स के अपशिष्ट का उपयोग करती है, शीर्ष मिट्टी पर बोझ कम करती है, और जीएचजी उत्सर्जन भी कम कर देती है। हालांकि, उन्होंने प्रकाश डाला कि पर्यावरण, सामाजिक और आर्थिक लाभ लाने के लिए केवल टिकाऊ उत्पादन पर्याप्त नहीं हो सकता है, उपयोग पैटर्न में परिवर्तन एक सतत भविष्य के लिए समान रूप से

आवश्यक है। तदनुसार, पर्यावरण अनुकूल उत्पादों की मांग को प्रोत्साहित करने के लिए सामाजिक आंदोलन उपयोग पैटर्न में बदलाव लाने में मदद करेगा।

बिहार में 4 धर्मल पावर प्लांट हैं जो हर साल अनुमानित 10.6 मिलियन टन फ्लाई ऐश का उत्पादन करते हैं और 2020 तक यह 22.57 मिलियन टन तक बढ़ने की उम्मीद है। प्रति वर्ष 7000 मिलियन ईटों के उत्पादन के लिए पर्याप्त फ्लाई ऐश उपलब्ध है। फ्लाई ऐश प्रौद्योगिकी के लाभ हैं ₹ (१.) यह उपजाऊ मिट्टी को संरक्षित करता है प्रति 10000 फ्लाई ऐश ईट बचाता है 30 टन मिट्टी। (2.) यह फ्लाई ऐश और अन्य अपशिष्ट का उपयोग करता है प्रति 15 टन कचरा प्रति 10000 फ्लाई ऐश ईट बनाने में उपयोग किया जाता है, (3.) छलममद यह ग्रीनहाउस गैस उत्पादन को कम करता है प्रति 100 टन फ्लाई ऐश ईट बचाता है लगभग 7 टन कार्बन। (3.) यह कोयला जैसे प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करता है प्रति 10000 फ्लाई ऐश ईट से लगभग 2 टन

कोयला बचाया गया है।

बिहार में फ्लाई ऐश ईट निर्माण और मांग में तेजी लाने के लिए हाल ही में कई कदम उठाए गए हैं-

एक फ्लाई ऐश ईट गुणवत्ता रेटिंग सिस्टम (एफएबीक्यूआरएस) को डिजाइन किया गया है।

बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन, बिहार विभाग द्वारा एक अधिमान्य खरीद नीति स्थापित की गई है जो सभी सरकारी निर्माण को 100 फ्लाई ऐश ईटों का उपयोग करने के लिए अनिवार्य है।

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (बीएसपीसीबी) ने रूइहाइट श्रेणी में फ्लाई ऐश ईटें लगाई हैं, जहां फ्लाई ऐश ईट इकाइयों को बोर्ड से प्रदूषण नियंत्रण संहति लेने से छूट दी गई है।

बीएसपीसीबी में हाल ही में एक राज्य स्तरीय परामर्श का आयोजन बिहार में निर्माण क्षेत्र को और अधिक हरे और समावेशी क्षेत्र में बदलने के दृष्टिकोण पर आयोजित किया गया।

इस साल की शुरुआत में पटना में एक शीन एंटरप्राइज मेला उद्यम आयोजित किया गया था।

बिहार के 4 जिलों (सुपौल, पूर्वी चंपारण, पश्चिम चंपारण, नालंदा) में डीए द्वारा फ्लाई ऐश ईटों पर जिला स्तर की जागरूकता कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

